राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि में महिला सशक्तिकरण

सृष्टि*

भारत में सामान्यतः महिलाओं के सशक्तिकरण को उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक गतिविधियों में सहभागिता के आधार पर प्रदर्शित किया जाता है। इस लेख के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को एक भिन्न परिप्रेक्ष्य से समझाने का प्रयास किया गया है, जिसमें सांस्कृतिक सशक्तिकरण प्रमुख है। सशक्तिकरण एक मानसिक अवस्था है, जो कुछ विशेष आंतरिक कुशलताओं व शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आदि परिस्थितियों पर निर्भर ही नहीं करती है, अपितु उन सुसंस्कृत मूल्यों पर भी निर्भर करती है, जिसे हम संस्कार कहते हैं। इसमें आगे बताया गया है कि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक रूप से आंशिक सशक्तिकरण हुआ है। अतः संस्कृति महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण में पथ-प्रदर्शक हो सकती है। इस लेख के अंत में 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' के भारतीय समाज के समावेशी विकास के लक्ष्य पर भी विशेष उल्लेख दिया गया है।

सशक्तिकरण शब्द वर्तमान समय में अधिक प्रचलित शब्द बन गया है। सशक्तिकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया को संबोधित करता है। आवश्यक रूप से, इसका अर्थ सत्ता व शक्ति के विकेंद्रीकरण से है। मुख्यतः इसका उद्देश्य निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में लोगों के वंचित भाग के द्वारा सहभागिता को प्राप्त करना है। सशक्तिकरण व्यक्तियों व समुदायों की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं आध्यात्मिक सुदृढ़ता को बढ़ाने की ओर संकेत करता है। सशक्तिकरण व्यक्तियों व समूहों की क्षमता को विस्तृत करने की एक प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत विकल्पों का निर्माण होता है तथा उन विकल्पों

को वांछित कार्यों व परिणामों में परिवर्तित किया जाता है। इस संदर्भ में, यह जीवन के उत्तम विकल्पों को बनाने हेतु लोगों की योग्यता में विस्तार को दर्शाता है।

सशक्त व्यक्ति के पास विकल्पों एवं कार्यों की स्वतंत्रता होती है, जिनके द्वारा उनका जीवन-प्रवाह सशक्तता की ओर बढ़ता है। यह विकल्प और कार्य उनके जीवन को प्रभावित भी करते हैं अर्थात् सशक्तिकरण स्व-निर्धारित परिवर्तन को दर्शाता है। यह विकास की माँग व पूर्ति, दोनों पक्षों को एक साथ सूचित करता है, जिसके अंतर्गत कमजोर व्यक्ति की सहायता की जाती है व उसे मानसिक, सामाजिक

एवं आर्थिक रूप से सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है। सशक्तिकरण का विषय, व्यक्ति के समग्र विकास के विविध आयामों का विषय बन गया है। जिसके माध्यम से विकासात्मक अवसरों को बढ़ाने, विकासात्मक परिणामों को विस्तार देने व लोगों के जीवन की गुणवत्ता को सुधारकर उन्हें सशक्त बनाने का प्रयास किया जाता है।

अधिकतर, सशक्तिकरण शब्द को महिलाओं के संबंध में प्रयोग किया जाता है। अतः इस शब्द का प्रयोग महिलाओं के कल्याण, महिलाओं का विकास, महिलाओं की समृद्धि, सहभागिता एवं महिलाओं के अंतःकरण के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। 1990 के दशक में सशक्तिकरण पर अधिक विचार किया जाने लगा। अतः जब सहभागिता, विचार-विमर्श एवं साझेदारी जैसे शब्द विकास की अवधारणात्मक सोच में आने लगे तो विकासात्मक संस्थाओं ने सक्षमता के उपागम में परिवर्तन किया, जैसे— लोगों को सक्षम बनाने के लिए उनकी आवश्यकताओं व वरीयताओं को प्राथमिकता देना। इस प्रकार, सशक्तिकरण के आयाम को मानवता के विकास के उदय के रूप में देखा जा सकता है।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात सरकारी कार्यक्रमों व योजनाओं में पहले तीन दशकों तक महिला कल्याण की शब्दावली का प्रयोग किया जाता रहा है। 1980 के दशक में इसके स्थान पर महिला विकास की शब्दावली अधिक प्रचलित हुई। इसके पश्चात 1990 के प्रारंभिक वर्षों में महिला समानता अर्थात् उन्हें समान अधिकार देने पर अधिक बल दिया जाने लगा। 1990 के अंतिम चरणों में सभी

ओर महिला समानता, महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकारिता की ध्वनि अधिक प्रखर होने लगी।

महिलाओं का विकास मात्र जेंडर-असमानता को कम करने के लिए ही आवश्यक नहीं है, अपितु देश में महिलाओं की मानव विकासात्मक स्थिति में विभिन्नता को कम करने के लिए भी आवश्यक है। महिला सशक्तिकरण की अवधारणा बहुअर्थी है, जिसके आयाम भी बहुकोणीय हैं। किसी एक दृष्टि अथवा महिलाओं के व्यक्तित्व के किसी एक पहलू से सशक्तिकरण नहीं किया जा सकता, अपितु महिलाओं का सर्वांगीण विकास करके ही देश की मुख्यधारा में उन्हें सम्मिलित किया जा सकता है। उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाकर, उनके अंदर आत्मविश्वास जगाया जा सकता है क्योंकि शताब्दियों से महिलाएँ पुरुषों की मुखापेक्षी रही हैं, अर्थात् उन पर आश्रित रही हैं।

सशक्तिकरण की सांस्कृतिक संकल्पना

महिलाओं के सशक्तिकरण की सांस्कृतिक संकल्पना को प्रायः महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधक पितृसत्तात्मक संरचनाओं, मान्यताओं, प्रथाओं, आस्थाओं, कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के उन्मूलन के संदर्भ में वर्णित व विश्लेषित किया जा सकता है। एक ऐसे वातावरण का उदयमान होना जिसके अंतर्गत महिलाएँ स्वायत्तता व स्वतंत्रता के आधार पर अपने जीवन से जुड़े निर्णय ले सकें अर्थात् महिलाओं को स्वतंत्र रूप से सोचने-विचारने की स्वतंत्रता, स्वतंत्र रूप से कार्य करने की स्वतंत्रता, स्वतंत्र रूप से विकल्पों का चुनाव करने की स्वतंत्रता आदि के आधार पर सक्षम, समर्थ तथा सशक्त बनाना।

वास्तव में, सशक्तिकरण एक मानसिक अवस्था है, जो कुछ विशेष आंतरिक कुशलताओं व शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आदि परिस्थितियों पर निर्भर ही नहीं करती है, अपितु उन सुसंस्कृत मूल्यों पर भी निर्भर करती है, जिसे हम संस्कार कहते हैं। जो बचपन से ही घर, परिवार में एक बच्चे को महिला द्वारा दिए जाते हैं। जब एक महिला द्वारा अपने बच्चे को उचित संस्कार सिखाए जाते हैं, तो वही बच्चा बड़ा होकर अपनी माँ के सिखाए गए संस्कारों के आधार पर महिलाओं का सम्मान करता है। इन्हीं जीवन मूल्यों के आधार पर महिलाओं को सांस्कृतिक रूप से सशक्त, समर्थ व सक्षम बनाया जा सकता है।

महिला सशक्तिकरण के लिए शक्ति के हस्तांतरण हेतु घर, परिवार व संस्था तथा समाज के सभी स्तरों पर निर्णय लेने की आवश्यकता है। क्योंकि सशक्तिकरण एक सक्रिय प्रक्रिया है, जिसका लक्ष्य महिलाओं को शक्ति हस्तांतरित करना है। महिलाओं के सशक्तिकरण का अर्थ है उनमें जागरूकता को विकसित करना, आत्मविश्वास का निर्माण करना, विकल्पों का विस्तार करना तथा संसाधनों तक पहुँच व नियंत्रण सम्मिलित है। मूलतः सशक्तिकरण स्वयं के भीतर से जागृत होना चाहिए अर्थात् स्वयं सशक्त होना।

महिला सशक्तिकरण आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, आत्म-मूल्य व जेंडर-समानता की विशेषता के लिए सहायक व बंधनमुक्त है। इस प्रकार सशक्तिकरण के बहु-आयाम हैं जो अंतःसंबंधित हैं। अतः महिला सशक्तिकरण अनवरत व संपोषणीय विकास का एक आवश्यक घटक है।

महिला सशक्तिकरण एवं शिक्षा

किसी महिला को शिक्षित करने का अर्थ उसके पूरे परिवार को सुशिक्षित करना है। समाज के लिए महिला का स्वस्थ, शिक्षित व समझदार होना आवश्यक है और वह शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। इसके अतिरिक्त शिक्षा राष्ट्र के निर्माण के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव का सर्वांगीण विकास किया जा सकता है। न्यायपूर्ण व न्यायसंगत समाज का विकास करने में भी शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। इसके साथ ही, शिक्षा को राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकास को बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण साधन माना जाता है।

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका एवं महिला सशक्तिकरण हेतु किए जाने वाले शैक्षणिक प्रयास

महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा प्राथमिक व मूलभूत माध्यम है। अतः यह माना जाता है कि शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में अपनी आवश्यक व उपयोगी भूमिका की अनुभूति करा सकती है। शिक्षा के माध्यम से ही महिला में कुशलता, दक्षता तथा क्षमता का विकास होता है। एक शिक्षित महिला मात्र न केवल स्वयं लाभान्वित होती है, अपितु भावी पीढ़ी को भी लाभान्वित करती है। शिक्षा से महिला स्वयं जीवन के सभी छोटे एवं बड़े निर्णय ले सकती है। महिलाओं के न्यूनतम शैक्षणिक स्तर का प्रत्यक्ष प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है, जो महिलाओं की निम्न स्तरीय कुशलता, दक्षता तथा क्षमता के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में न्यून सहभागिता को प्रदर्शित करता है। महिलाओं

की सक्षमता से व्यक्ति, परिवार, समाज व राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति प्रभावित होती है। जनगणना 2011 के अनुसार, देश में समग्र साक्षरता दर 74 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत है और महिला साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है जबकि 1991 की जनगणना में समग्र साक्षरता 52.21 प्रतिशत थी, जिसमें 64.13 प्रतिशत पुरुष व 39.29 प्रतिशत महिलाएँ थीं। इस प्रकार, देखा जाए तो 1991 से 2011 तक महिला साक्षरता दर 26.17 प्रतिशत बढ़ी है। परंतु अभी भी महिला व पुरुषों की साक्षरता दर में 16.68 प्रतिशत का अंतर है।

महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि और सशक्तिकरण हेतु केंद्र सरकार द्वारा भी विभिन्न शैक्षिक प्रयास किए गए हैं। केंद्र सरकार द्वारा देश भर में योजना 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' का प्रारंभ 2015 में किया गया। घटते जेंडर अनुपात को बढ़ाने के साथ इस नीति के अंतर्गत विद्यालयों में लड़कियों की नामांकन दर बढ़ाने और शिक्षा के अधिकार के नियमों को लागू करने जैसे उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं। विद्यालयी शिक्षा में समग्र शिक्षा के अंतर्गत बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु अनेक पहलें की गई हैं।

'कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना' की शुरुआत वर्ष 1989 में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986* के लक्ष्यों के अनुसार महिलाओं की शिक्षा में सुधार करने तथा उन्हें सशक्त व समर्थ करने के लिए की गई थी। इस योजना का प्रारंभ पहले दो वर्ष तक अलग-अलग योजनाओं के रूप में शिक्षा प्रदान करने के राष्ट्रीय कार्यक्रम व महिला समाख्या योजना के साथ सामंजस्य बिठाते हुए किया गया था। बाद

में उसका सर्व शिक्षा अभियान, 2001 में एक पृथक घटक के रूप में विलय कर दिया गया।

अतः स्वतंत्रता के पश्चात सरकार व संगठनों के प्रयासों से महिलाओं के लिए विकास के द्वार खुले तथा शिक्षा का प्रसार हुआ, जिससे उनमें जागृति तथा आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ। परिणामस्वरूप महिलाएँ प्रगति के पथ पर आगे बढ़ीं। आज महिलाएँ राजनीति, सामाजिक सुधार, शिक्षा, पत्रकारिता, खेल-कूद, विज्ञान, साहित्य, व्यवसाय, पुलिस, सेना, चिकित्सा तथा शासन व प्रशासन आदि में पुरुषों के साथ समान रूप से कार्य कर रही हैं। परंतु आज भी इस वैश्विक नागरिकता के दौर में हमें महिला सशक्तिकरण, महिला समानता और महिला अधिकारों के विषय पर चिंतन करने की आवश्यकता है, क्योंकि आज भी महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकारों तथा सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता है। इसलिए हमें संवैधानिक मूल्यों के साथ-साथ समाज में सांस्कृतिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता है ताकि महिलाओं को समानता, स्वतंत्रता व स्वायत्तता प्राप्त हो सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सांस्कृतिक मूल्यों के विकास पर बल दिया गया है, जिससे समाज को सांस्कृतिक रूप से सशक्त करने में मार्गदर्शन मिलेगा। इन सांस्कृतिक मूल्यों का वर्णन इस प्रकार है—

1. **विद्यालयों में पाठ्यचर्या एवं शिक्षणशास्त्र**
स्कूली शिक्षा की पाठ्यचर्या तथा शैक्षणिक संरचना को पुनर्गठित किया जाएगा ताकि 3-8, 8-11, 11-14 तथा 14-18 वर्ष की आयु के विभिन्न पढ़ावों पर विद्यार्थियों के विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के अनुसार उनकी रुचियों व विकास की आवश्यकताओं पर

समुचित ध्यान दिया जा सके। इसलिए स्कूली शिक्षा में नवाचारी शिक्षणशास्त्र पर विशेष बल दिया गया है। इसमें खेल-खेल और गतिविधि आधारित शिक्षण, अनुभव एवं खिलौना आधारित शिक्षण, कला एवं खेल समन्वित शिक्षण, आईसीटी आधारित शिक्षण आदि सम्मिलित हैं।

2. विद्यार्थियों का समग्र विकास

सभी स्तरों पर पाठ्यचर्या और शिक्षण विधि का समग्र केंद्र बिंदु शिक्षा प्रणाली को रटने की प्रथा से मुक्त करते हुए वास्तविक समझ और ज्ञान की ओर ले जाना है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र संज्ञानात्मक समझ न होकर चरित्र निर्माण और इक्कीसवीं शताब्दी के मुख्य कौशलों एवं दक्षताओं से सुसज्जित करना है। वास्तव में ज्ञान एक छुपी हुई निधि है, जिसे शिक्षा के माध्यम से ही बाहर लाया जा सकता है। इस प्रकार *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* शिक्षार्थी की प्रतिभा को उजागर करने के साथ-साथ उसके चरित्र निर्माण पर भी आवश्यक रूप से बल देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के भारतीयकरण की बात कही गई है, जो अपने आप में बहुत बड़ी अवधारणा है। इससे विद्यार्थियों में भारतीयता के प्रति स्वाभाविक रूप से प्रेम उत्पन्न होगा।

3. समतामूलक और समावेशी शिक्षा

शिक्षा समानता व सामाजिक न्याय प्राप्त करने का एकमात्र व सबसे प्रभावी साधन है, जिसमें प्रत्येक नागरिक को विकास करने व राष्ट्रहित में योगदान करने का अवसर प्राप्त हो। यह

शिक्षा नीति इस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ती है, जिससे देश के किसी भी बच्चे के सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों में बाधाएँ न आएँ। समावेशी शिक्षा का अर्थ, शिक्षा की ऐसी प्रणाली से है जिसमें सामान्य व दिव्यांग विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं तथा शिक्षण-अधिगम व्यवस्था को दिव्यांग विद्यार्थियों के अनुरूप अनुकूलित किया जाता है।

समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर

- भारत में समग्र व बहु-विषयक विधि से सीखने की एक प्राचीन परंपरा है, तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों से लेकर ऐसे विभिन्न व्यापक साहित्य हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में विषयों के संयोजन को प्रकट व प्रस्तुत करते हैं। प्राचीन भारतीय साहित्य, जैसे— बाणभट्ट की *कादंबरी* में शिक्षा की 64 कलाओं में गायन, चित्रकला जैसे विषयों के साथ-साथ वैज्ञानिक क्षेत्र, जैसे— रसायन शास्त्र और गणित, व्यावसायिक कार्य, उदाहरण के लिए— औषधि व अभियांत्रिकी व साथ ही सम्प्रेषण, विचार-विमर्श और वाद-संवाद करने के व्यावहारिक कौशल भी समाहित हैं।
- इस प्रकार, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* से, रचनात्मकता व नवाचार, आलोचनात्मकता चिंतन एवं उच्च स्तरीय चिंतन की क्षमता, समस्या-समाधान योग्यता, समूह कार्य में दक्षता, सम्प्रेषण कौशल, सीखने में गहनता और पाठ्यचर्या के सभी विषयों की समझ, सामाजिकता और नैतिकता के प्रति जागरूकता आदि जैसे सकारात्मक शैक्षणिक परिणाम प्राप्त होंगे। साथ ही, समग्र व

बहु-विषयक शैक्षिक दृष्टिकोण से अनुसंधान में भी सुधार हो सकेगा।

- समग्र व बहु-विषयक शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी प्रकार की क्षमताएँ, जैसे— बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावनात्मक तथा नैतिक क्षमताओं को समन्वित रूप से विकसित करना। इस प्रकार की समग्र शिक्षा, व्यावसायिक, तकनीकी विषयों सहित सभी कार्यक्रमों का दृष्टिकोण होगी।

निष्कर्ष

समाज में महिलाओं का स्थान उपयोगी व महत्वपूर्ण है, अपितु आज भी महिलाएँ समाज में पुरुषों से कदम से कदम मिलाने को प्रयासरत हैं। इस अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है कि जैसे-जैसे महिलाओं का शिक्षा की ओर रुझान बढ़ा है अर्थात् वे शिक्षित

हुई हैं, वैसे ही महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में भी सुदृढ़ हुई हैं, परंतु अभी उनका आंशिक सशक्तिकरण हुआ है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण पर विशेष बल देती है। अतः नैतिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में मूल्यों, प्रणालियाँ, विश्वास, आचार, व्यवहार व संस्कारों का विकास होगा, जिससे उनमें महिलाओं के प्रति सम्मान व समानता का भाव विकसित होगा, जो महिला सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध होगा। यह रचनात्मक व व्यापक परिवर्तन महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधक तत्वों, जैसे— पितृसत्तात्मक संरचनाओं, मान्यताओं, प्रथाओं, आस्थाओं, कुरीतियों का उन्मूलन करेगी, जिससे महिलाएँ स्वतंत्र, स्वायत्त, सक्षम, सशक्त व समर्थ बन सकेंगी।

संदर्भ

मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.